आचार्यरत्न श्रीजिनरत्नसूरि

[भँवरलाल नाहटा]

जगत्पूज्य मोहनलालजी महाराज के संघाड़े में आचार्य श्रीजिनरत्नसूरिजी वस्तुतः रत्न ही थे। आपका जन्म कच्छ देश के लायजा में सं० १९३८ में हुआ। आपका जन्म नाम देवजी था। आठ वर्ष की आयु में पाठशाला में प्रवेश किया। धार्मिक और व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त कर बम्बई में अपने पिताजी की दुकान का काम संभाल कर अर्थोपार्जन द्वारा माता-पिता को सन्तोष दिया। देश में आपके सगाई-विवाह की बात चल रही थी और वे उत्सुकता से देवजी भाई की राह देखते थे। पर इधर बम्बई में श्रीमोहनलालजी महाराज का चातुर्मास होने से संस्कार-संपन्न देवजी भाई प्रतिदिन अपने मित्र लधाभाई केसाथ व्याख्यान सुनने जाते और उनकी अमृत वाणी से दोनों की आत्मा में वैरग्य बीज अंकुरित हो गए। दोनों मित्रों ने यथावसर पूज्यश्री से दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की। पूज्यश्री ने उन्हें योग्य ज्ञातकर अपने शिष्य श्रीराज-मुनिजी के पास रेवदर भेजा। सं० १९५८ चैत्रबदि ३ को दीक्षा देकर देवजी का रत्नमुनि और लधाभाई का लब्धि मुनि नाम दिया। सं० १९५९ का चातुर्मास मंढार में करने के बाद सं० १९६० वै०-शु०-१० को शिवगंज में पन्यास श्रीयशोमुनिजी के करकमलों से बड़ी दीक्षा हुई। सं० १९६० शिवगंज, १९६१ नवाशहर सं० १९६२ का चातुर्मास पीपाड़ में गुरुवर्य श्रीराजमुनिजी के साथ हुआ। व्याकरण, अलंकार, काव्यादिका अध्ययन सुचारुतया करके कूचेरा पधारे। यहां राजमुनिजी के उपदेश से २५ घर स्थानकवासी मन्दिर आम्नाय के बने।

श्रीरत्नमुनिजी योगोद्वहनके लिए पन्यासजी के पास चाणोद गये। उनके पास आपका शास्त्राभ्यास अच्छी तरह चलता था, इधर श्रीमोहनलालजी महाराज की अस्वस्थता के कारण पन्यासजी के साथ बम्बई की ओर विहार किया, पर भक्तों के आग्रहवश मोहनलालजी महाराज ने सूरत की ओर विहार किया था, अतः मार्ग में ही दहाणु में गुरुदेव के दर्शन हो गए। श्रीमोहनलालजी महाराज १८ शिष्य-प्रशिष्यों के साथ सूरत पधारे। श्रीरत्नमुनिजी उनकी सेवा में दत्तचित्त थे। उनका हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त कर उनकी आज्ञा से पन्यासजी के साथ आप पालीताणा पधारे। फिर रतलाम आदि में विचर कर उनकी आज्ञासे भावमुनिजी के साथ केशरियाजी पधारे। शरीर अस्वस्थ होते हुए भी आपने २१ मास पर्यन्त आंबिल तप किया। पन्यासजी ने सं० १९६६ में ग्वालियर में उत्तराध्ययन व भगवती सूत्र का योगोद्वहन श्रीकेशरमुनिजी, भावमुनिजी और चिमन मुनिजी के साथ आपको भी कराया। तदनन्तर आप गणि पद से विभूषित हुए। सं० १९६७ का चातुर्मास गुरु महाराज श्रीराजमुनिजी के साथ करके १९६८ महीदपुर पधारे। तदनन्तर सं० १९६९ का चातुर्मास बम्बई किया। यहां फा० सु० २ को गुरु महाराज की आज्ञा से वोछडोद के श्रीपन्नालाल को दीक्षा देकर प्रेममुनि नाम से प्रसिद्ध किया। सं० १९७० का चातुर्मास भी बम्बई किया। यहाँ श्रीजिनयशःसूरिजी महाराज के पावापुरी में स्वर्ग-वासी होने के दुःखद समाचार सुने।

गणिवर्य श्रीरत्नमुनिजी को जन्मभूमि छोड़े बहुत वर्ष हो गए थे अतः श्रावकसंघ की प्रार्थना स्वीकार कर शत्रुंजय यात्रा करते हुए अपने शिष्यों के साथ कच्छ में प्रविष्ट हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंजार होते हुए भद्रेश्वर तीर्थ की यात्राकर लायजा पधारे। यहाँ पूजा प्रभावना, उद्यापनादि अनेक हुए। सं० १९७१ का चातुर्मास बीदड़ा, १९७२ का मांडवी किया। यहां से नागलपुर पधारने पर गुरुवर्य राजमुनिजी के स्वर्गवास होने के समाचार मिले। सं० १९७३ भुज, १९७४ लायजा चातुर्मास किया। फिर मांडवी में राजश्रीजी को दीक्षा दी। कच्छ देश में धर्म प्रचार करते हुए १९७५ सं० में दुर्गापुर (नवावास) चौमासा किया और संघ में पड़े हुए दो तड़ोंको एक कर शान्ति की। इन्फ्लुएंजा फैलने से शहर खाली हुआ और रायण जाकर चातुर्मास पूर्ण किया। सं० १९७३ में डोसाभाई लालचन्द का संघ निकला ही था, फिर भुज से शा० वसनजी वाघजी ने भद्रेश्वर का संघ निकाला। गणिवर्य यात्रा करके अंजार पधारे। इधर सिद्धाचलजी यात्रा करते हुए श्रीलब्धिमुनिजी आ मिले। उनके साथ फिर भद्रेश्वर पधारे। सं० १९७६ का चातुर्मास भूज और सं० १९७७ का मांडवी किया। फिर जामनगर, सूरत, कतार गांव, अहमदाबाद, सेरिसा, भोयणीजी, पानसर, तारंगा, कुंभारियाजी, आबू यात्रा करते हुए अणादरा पधारे। लब्धिमुनिजी, भावमुनिजी को शिवगंज भेजा और स्वयं प्रेममुनिजी के साथ मंढार चातुर्मास किया। पाली में पन्यास श्रीकेशरमुनिजी से मिले। दयाश्रीजी को दीक्षा दी। सं० १९८० का चातुर्मास जेसलमेर किया। किले पर दादा साहब की नवीन देहरी में दोनों दादासाहब की प्रतिष्ठा कराई। सं० १९८१ में फलोदी चातुर्मास किया। ज्ञानश्रीजीव वल्लभश्रीजी के आग्रह से हेमश्रीजी को दीक्षा दी। लोहावट में गौतमस्वामी और चक्रेश्वरीजी की प्रतिष्ठा कर अजमेर पधारे। तदनन्तर रतलाम, सेमलिया, पधारे। सं० १९८२ नलखेड़ा चातुर्मास किया, चौदह प्रतिमाओं की अंजनशलाका की। मंडोदा में रिखबचन्दजी चोरड़िया के बनवाये हुए गुरुमंदिर में दादा जिनदत्तसूरि आदि की प्रतिष्ठा करवायी। खुजनेर और पड़ाणा में गुरुपादुकाएं प्रतिष्ठित कीं। डग पधारने पर श्रीलक्ष्मीचन्दजी बैद के तरफसे उद्यापनादि हुए और दादा जिनकुशलसूरिजी व रत्नप्रभसूरिजी की पादुका-प्रतिष्ठा की। मांडवगढ यात्रा करके इन्दौर मक्सीजी, उज्जैन, होते हुए महीदपुर पधारे। लब्धिमुनिजी और प्रेममुनिजी को बोछडोद चातुर्मासार्थ भेजा। स्वयं भावमुनिजी के साथ रुणीजा पधारकर सं० १९८३ का चातुर्मास किया। १९८४ महीदपुर, सं० १९८५ का चातुर्मास भाणपुरा किया। उद्यापन और बड़ी दीक्षादि हुए। मालवा में गणिजी महाराज को विचरते सुनकर बम्बई से रवजी सोजपाल ने आग्रह पूर्वक बम्बई पधारने की विनती की। आपश्री ग्रामानुग्राम विचरते हुए घाटकोपर पहुँचे। मेघजी सोजपाल, गणसी भीमसी आदि की विनतिसे बम्बई लालवाड़ी पधारे। दादासाहब की जयन्ती श्रीगौड़ीजी के उपाश्रय में श्रीविजयवल्लभसूरिजी की अध्यक्षता में बड़े ठाट-माठ से मनायी। सं० १९८६ का चौमासा लालवाड़ी में किया।

गणिवर्य श्रीरतनमुनिजी के उपदेश और मूलचन्द हीराचन्द भगत के प्रयास से महावीर स्वामी के पीछे के खरतरगच्छीय उपाश्रय का जीर्णोद्धार हुआ। सं० १९८७ का चातुर्मास वहीं कर लब्धिमुनिजी के भाई लालजी भाई को सं० १९८८ पो० सु० १० को दीक्षितकर महेन्द्र मुनि नाम से लब्धिमुनिजी के शिष्य बनाये। प्रेममुनिजी को योगोद्वहन के लिए श्री केशरमुनिजी के पास पालीताना भेजा। वहां कच्छ के मेधजी को सं० १९८९ पोष सुदि १२ के दिन केशरमुनिजी के हाथ से दीक्षित कर प्रेममुनिजी का शिष्य बनाया।

श्री रत्नमुनिजी महाराज सूरत, खंभात होते हुए पालीताना पधारे। श्री केशरमुनिजी को वन्दन कर फिर गिरनारजी की यात्रा की और मुक्तिमुनिजी को बड़ी दीक्षा दी। सं० १९८९ का चातुर्मास जामनगर करके अंजार पधारे। भद्रेश्वर, मुंद्रा, मांडवी होकर मेरावा पधारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेणबाई को बड़े समारोह और विविध धर्मकार्यों में सद् द्रव्यव्यय करने के अनन्तर दीक्षा देकर राजश्रीजी की शिष्या रत्नश्री नाम से प्रसिद्ध किया।

सं० १६६१ का चातुर्मास अपने प्रेममुनिजी और मुक्ति मुनिजी के साथ भुज में किया। महेन्द्रमुनिजी की बीमारी के कारण लब्धिमुनिजी मांडवी रहे। उमरसी भाई की धर्मपत्नी इन्द्राबाई ने उपधान, अठाई महोत्सव पूजा, प्रभावनादि किये। तदनन्तर भुज से अंजार, मुद्रा, होते हुए मांडवी पधारे। यहां महेन्द्रमुनि बीमार तो थे ही चै० सु० २ को कालधर्म प्राप्त हुए। गणिवर्य लायजा पधारे, खेराज भाई ने उत्सव, उद्यापन, स्वधर्मीवात्सल्यादि किये।

कच्छ के डुमरा निवासी नागजी-नेणबाई के पुत्र मूलजी भाई—जो अन्तर्वैराग्य से रंगे हुए थे—माता पिता की आज्ञा प्राप्त कर गणिवर्य श्री रत्नमुनिजी के पास आये। दीक्षा का मुहुर्त्त निकला। नित्य नई पूजा-प्रभावना और उत्सवों की धूम मच गई। दीक्षा का वरघोड़ा बहुत ही शानदार निकला। मूलजी भाई का वैराग्य और दीक्षा लेने का उल्लास अपूर्व था। रथ में बैठे वरसीदान देते हुए जय-जयकारपूर्वक आकर वै० शु० ६ के दिन गणीश्वरजी के पास विधिवत् दीक्षा ली। आपका नाम भद्रमुनिजी रखा गया। सं० १६६२ का चातुर्मास रत्नमुनिजी ने लायजा, लब्धिमुनिजी, भावमुनिजी का अंजार व प्रेम मुनिजी, भद्रमुनिजी, का मांडवी हुआ। चातुर्मास के बाद मांडवी आकर गुरु महाराज ने भद्रमुनिजी को बड़ी दीक्षा दी।

तुंबड़ी के पटेल शामजी भाई के संघ सहित पंचतीर्थी यात्रा की। सुथरी में घृतकलोल पार्श्वनाथजी के समक्ष संघपति माला शामजी को पहनायी गई। सं० १६६३ में मांडवी चातुर्मास कर मुंद्रा में पधारे और रामश्रीजी को दीक्षित किया। वहीं इनकी बड़ी दीक्षा हुई और कल्याणश्रीजी की शिष्या प्रसिद्ध की गई। वहां से रायण में सं० १६६४ चातुर्मास कर सिद्धाचलजी पधारे। इस समय आप का १० साधु थे। प्रेममुनिजी के भगवती सूत्र का योगोद्वहन और नन्दनमुनिजी की बड़ी दीक्षा हुई। कल्याणभुवन में कल्पसूत्र के योग कराये, पन्नवणा सूत्र बाचा, प्रचुर तपश्चर्याएं हुई। पूजा प्रभावना स्वधर्मीवात्सल्यादि खूब हुए। मुर्शिदाबाद निवासी राजा विजयसिंहजी की माता सुगुण कुमारी को तरफ से उपधानतप हुआ। मार्गशीर्ष सुदि ५ को गणिवर्य रत्नमुनिजी के हाथ से मालरोपण हुआ। दूसरे दिन श्री बुद्धिमुनिजी और प्रेममुनिजी को 'गणि' पद से भूषित किया गया। जावरा के सेठ जड़ावचन्दजी की ओर से उद्यापनोत्सव हुआ।

सं० १६६६ का चातुर्मास अहमदाबाद हुआ। फिर बड़ौदा पधारकर गणिवर्य ने नेमिनाथ जिनालय के पास गुरुमन्दिर में दादा गुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरि की मूर्त्ति पादुका आदि की प्रतिष्ठा बड़े ही ठाठ-बाठ से की। वहाँ से बंबईकी ओर विहार कर दहाणु पधारे। श्रीजिनऋद्धिसूरिजी वहाँ विराजमान थे, आनन्द पूर्वक मिलन हुआ। संघ की विनति से बम्बई पधारे। संघ को अपार हर्ष हुआ। श्रीरत्नमुनिजी के चरित्र गुण की सौरभ सर्वत्र व्याप्त थी। आचार्य श्री जिनऋद्धिसूरिजी महाराज ने संघ की विनति से आपको आचार्य पद देना निश्चय किया। बम्बई में विविध प्रकार के महोत्सव होने लगे। मिती अषाढ़ सुदि ७ को सूरिजी ने आपको आचार्य पद से विभूषित किया। सं० १६६७ का चातुर्मास बम्बई पायधुनी में किया। श्रीजिनऋद्धिसूरि दादर, लब्धिमुनिजी घाटकोपर और प्रेममुनिजी ने लालबाड़ी में चौमासा किया। चरितनायक के उपदेश से श्री जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार स्थापित हुआ। लालबाड़ी में विविध प्रकार के उत्सव हुए। आचार्य श्री ने अपने भाई गणशी भाई की प्रार्थना से सं० १६६८ का चातुर्मास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लालबाड़ी किया। वेलजी भाई को दीक्षा देकर मेघमुनि नाम से प्रसिद्ध किया, बहुत से उत्सव हुए।

सं० १९९९ में दश साधुओं के साथ चरित्रनायक ने सूरत चौमासा किया। फिर बड़ौदा पधारकर लब्धिमुनिजी के शिष्य मेघमुनिजी व गुलाबमुनिजी के शिष्य रत्नाकरमुनि को बड़ी दीक्षा दी। सं० २००० का चातुर्मास रतलाम किया, उपधान तप आदि अनेक धर्म कार्य हुए। सेमलिया जी की यात्रा कर महीदपुर पधारे। महीदपुर में राजमुनि जी के भाई चुनीलालजी बाफणा ने मन्दिर निर्माण कराया था, प्रतिष्ठा कार्य बाकी था, अतः खरतरगच्छ संघ को इसका भार सौंपा गया पर वह लेख पत्र उनके बहिन के पास रखा, वह तपागच्छ की थी उसने उनलोगों को दे दिया। कोर्ट चढ़ने पर दोनों को मिलकर प्रतिष्ठा करने का आदेश हुआ, पर उन्होंने कब्जा नहीं छोड़ा तो क्लेश बढ़ता देख खरतरगच्छ वालों ने नई जमीन लेकर मन्दिर बनाया और उसमें राजमुनिजी व नयमुनिजी के ग्रन्थों का ज्ञान भंडार स्थापित किया। प्रतिमा की अप्राप्ति से संघ चिन्तित था क्योंकि उत्सव प्रारंभ हो गया था फिर उपाध्यायजी, रत्नश्रीजी और श्रावक और श्राविका गोमी बाई को एक सा प्रतिमा प्राप्त होने व पुष्पादि से पूजा करने का स्वप्न आया। आचार्य श्री ने बीकानेर जाकर प्रतिमा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। सं० ११५५ की प्रतिमा तत्काल प्राप्त हो गई और आनन्दपूर्वक प्रतिष्ठासम्पन्न हुई। दादा साहब की मूर्त्ति पादुकाएँ, राजमुनिजी व सुखसागर जी की पादुकाएं तथा चक्रेश्वरी देवी की भी प्रतिष्ठा हुई। सं० २००१ का चातुर्मास महीदपुर हुआ। बड़ोदिया में पधारने पर उद्यापन व दादासाहब की चरण प्रतिष्ठा हुई। शुजालपुर के मंदिर में दादासाहब की चरण प्रतिष्ठा की। स० २००२ का चातुर्मास कर आसामपुरा, इन्दौर होते हुए मांडवगढ़ यात्रा कर रतलाम पधारे। गरवट्ट गाँव में दादासाहब की चरण प्रतिष्ठा की। तदनन्तर भाणपुरा कुकुटेश्वर, प्रतापगढ़ व चरणोद पधारे। चरणोद में प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न कराके सं० २००३ को प्रतापगढ़ में चातुर्मास किया। मंदसौर में चक्रेश्वरीजी की प्रतिष्ठा कराई। जावरा से सेमलियाजी का संघ निकला, संघपति चांदमलजी चोपड़ा को तीर्थमाला पहनायी। रतलाम से खाचरोद पधारे। जावरा के प्यारचंद जी पगारिया ने वह पार्श्वनाथजीका संघ निकाला। तदनंतर जयपुर की ओर बिहार कर कोटा पधारे। गणि श्री भावमुनिजी को पक्षाघात हो गया और जेठ वदि १५ की रात्रि में उनका समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया।

स० २००४ का चातुर्मास कोटा में हुआ। भगवती सूत्रवाचना, अठाई महोत्सव एवं स्वधर्मी-वात्सल्यादि अनेक धर्मकार्य सेठ केशरीसिंहजी बाफणा ने करवाये। तदनंतर सूरिजी जयपुर पधारे। अशातावेदनीय के उदय से शरीर में उत्पन्न व्याधि को समता से सहन किया। श्रीमालों के मंदिर में देरागाजीखान से आई हुई प्रतिमाएं स्थापित की। कच्छभुज की दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा के लिये संघ की ओर से विनती करने रवजी शिवजी बोरा आये। सं० २००५ का चातुर्मास जयपुर कर स० २००६ का अजमेर में किया। सं० २००७ ज्येष्ठ सुदि ५ को विजयनगर में प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ, चन्द्रप्रभस्वामी आदि के सह दादासाहब के चरणों की प्रतिष्ठा की। फिर रतनचन्दजी संचेती की विनती से अजमेर पधारे। उनके बीस-स्थानक का उद्यापन हुआ। भड़गतियाजी की कोठी के देहरासर में दादा साहब जिनदत्तसूरि मूर्ति की प्रतिष्ठा करवायी। अजमेर से व्यावर पधार कर मुलतान निवासी हीरालालजी भुगड़ी को स० २००७ आषाढ़ सुदि १ को दीक्षित कर हीरमुनि बनाये। उपधान तप हुआ। सूरिजी चातुर्मास पूर्ण कर पाली, राता महावीर जी, शिवगंज, कोरटा होते हुए गढ़सिवाणा पधारे। फिर वांकली, तखतगढ़ होकर श्रीकेशरमुनिजी की जन्मभूमि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूडा पधारे। सं० २००८ जेठ बदि ७ को दादा जिनदत्तसूरि मूर्ति, मणिधारी जिनचंद्रसूरि व जिनकुशलसूरि एवं पं० केशरमुनिजी की पादुकाएं प्रतिष्ठित की। वहां से आहोर, जालोर होते हुए गढ़सिवाणा आकर चातुर्मास किया। फिर नाकोड़ाजी पधार कर मार्गशिर सुदि १ को दादासाहब जिनदत्तसूरि मूर्ति व श्रीकीर्तिरत्नसूरिजी की जीर्णोद्धारित देहरी में प्रतिष्ठा करवाई। नाकोड़ाजी से विहार कर सूरिजी डीसा कैंप भीलड़ियाजी होते हुए राधनपुर, कटारिया, अंजार होते हुए भद्रेश्वर तीर्थ पहुँचे।

भद्रेश्वरजी की यात्रा कर मांडवी होते हुए भुज पधारे, संघ का चिरमनोरथ पूर्ण हुआ। यहाँ दादाबाड़ी निर्माण का लम्बा इतिहास है पर इसकी चेष्टा करने वाले हेमचन्द भाई जिस दिन स्वर्गवासी हुए उसी दिन आपने स्वप्न में पुरानी और नई दादावाड़ी आदि सहित उत्सव को व हेमचंद भाई आदि को देखा वही दृश्य भुज की दादावाड़ी प्रतिष्ठा के समय साक्षात् हो गया। सं० २००९ माघ सुदि ११ को बड़े समारोह पूर्वक प्रतिष्ठा हुई। सूरत से सेठ बालूभाई विधि-विधान के लिये आये। जिनदत्तसूरि की प्रतिमा व मणिधारी जिनचन्द्रसूरि व श्रीजिनकुशलसूरि के चरणों की प्रतिष्ठा बड़े धूमधाम से हुई।

सं० २०१० का चातुर्मास सूरिजी ने मांडवी किया। मि० व० २ को धर्मनाथ जिनालय पर ध्वजदंड चढ़ाया गया, उत्सव हुए। मोटा आसंबिया में मंदिर का शताब्दी महोत्सव हुआ। भुज की दादाबाड़ी में हेमचंद भाई की ओर से नवीन जिनालय निर्माण हेतु सं० २०११ वै० शु० १२ को सूरिजी के कर-कमलों से खात मुहूर्त्त हुआ। तदनंतर सूरिजी ने अंजार चातुर्मास किया।

चातुर्मास के पश्चात् भद्रेश्वर यात्रा कर मांडवी पधारे। वहां की विशाल रमणीय दादावाड़ी में दादा जिनदत्तसूरि प्रतिमा विराजमान करने का उपदेश दिया, पटेल वीकमसी राघवजी ने इस कार्य को सम्पन्न करने की अपनी भावना व्यक्त की। सूरिजी का शरीर स्वस्थ था, आंख का मोतियबिंद उतरता था जिसका इलाज कराना था पर माघ वदी ८ को अर्द्धाङ्ग व्याधि हो गयी और माघ सुदि १ के दिन समाधिपूर्वक स्वर्गवासी हुए। आपने अपने जीवन में शुद्ध चरित्र पालन करते हुए, शासन और गच्छ की खूब प्रभावना की थी।

●

विद्वद्वर्य उपाध्याय श्रीलब्धिमुनिजी

[भँवरलाल नाहटा]

बीसवीं शताब्दी के महापुरुषों में खरतरगच्छ विभूषण श्री मोहनलालजी महाराज का स्थान सर्वोपरि है। वे बड़े प्रतापी, क्रियापात्र, त्यागी-तपस्वी और वचनसिद्ध योगी पुरुष थे। उनमें गच्छ कदाग्रह न होकर संयम साधन और समभावी श्रमणत्व सुविशेष था। उनका शिष्य समुदाय भी खरतर और तपा दोनों गच्छों की शोभा बढ़ाने वाला है। उ० श्रीलब्धिमुनिजी महाराज ने आपके वचनामृत से संसार से विरक्त होकर संयम स्वीकार किया था।

श्रीलब्धिमुनिजी का जन्म कच्छ के मोटी खाखर गाँव में हुआ था। आपके पिता दनाभाई देढिया वीसा ओसवाल थे। सं० १९३५ में जन्म लेकर धार्मिक संस्कार युक्त माता-पिता की छत्र-छाया में बड़े हुए। आपका नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org